फ़र्क पडता हैं

फ़र्क पडता हैं
मौसम बदलता हैं तो फ़र्क पडता हैं
चिडियां चहकती हैं तो फ़र्क पडता हैं
बेटी गोद में आती हैं तो फ़र्क पडता हैं
भूख बढती हैं आत्महत्यायें होती हैं तो फ़र्क पडता हैं
आदमी अकेले लडना तय करता हैं तो फ़र्क पडता हैं
आसमान में बादल छा जातें हैं तो फ़र्क पडता हैं
आंखे देखती हैं कान सुनते हैं तो फ़र्क पडता हैं
यहां तक कि यह सोचने से भी फ़र्क पडता हैं कि क्या फ़र्क पडता हैं
जहां भी आदमी हैं, हवा हैं, रोशनी हैं, आसमान हैं,
अंधेरा हैं, पहाड हैं, नदियां हैं, समुद्र हैं, खेत हैं,
पक्षी हैं, लोग हैं, आवाजें हैं, नारे हैं...
फ़र्क पडता हैं
फ़र्क पडता हैं इसलिए
फ़र्क लानेवालोंके साथ लोग खडे होते हैं
और लोग कहने लगते हैं की
“हां! फ़र्क पडता हैं!”

– विष्णु नागर